CENTRAL UNIVERSITY OF ODISHA, KORAPUT
OFFICE OF THE PUBLIC RELATIONS

Press Release, 17.06.2020

'भारतीय उच्च शिक्षा में महिलाएँ: चुनौतियाँ एवं अवसर' विषय पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का हुआ आयोजन

समाज और राष्ट्र उन्नति के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण :- डॉ. पंकज मित्तल

"भारतीय उच्च शिक्षा में महिलाएँ: चुनौतियाँ और अवसर" विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन आज ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट और महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। डॉ। (श्रीमती) पंकज मित्तल महासचिव, भारतीय विश्वविद्यालयों के संघ, नई दिल्ली ने इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित किया। प्रो। शशिकला वंजारी, माननीय कुलपति, एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई; प्रो। सुनैना सिंह, माननीय कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय, नालंदा और प्रो। मैं रामब्रह्मम माननीय कुलपति, ओडिशा के केंद्रीय विश्वविद्यालय ने विशेष अतिथि के रूप में बात की। संगोष्ठी की अध्यक्षता एमजीसीयूबी के प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा माननीय कुलपति ने की।

मुख्य अतिथि के तौर पर भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली की महासचिव डॉ. पंकज मित्तल ने कही कि आज हर क्षेत्र में महिलाएं आगे आई है। महिलाओं के प्रति मानसिक अवधारणाओं को भी बदलने की आवश्यकता है, जब हम बड़े- बड़े वैज्ञानिक, डॉक्टर के बारे में सोचते हैं तो हमारे मस्तिष्क में पुरुष की छवि बनती है और जब हम नर्स या रिसेप्शनिस्ट के बारे में सोचते हैं तो महिला की छवि बनती है। हमारे पुरुष प्रधान समाज में अब परिवर्तन हो रहा है, लेकिन आज भी ग्रामीण समाज में महिलाओं के उच्च शिक्षा एवं अवसर के बारे में पुरुष निर्णय लेते हैं। इसपर भी हमें विचार करना चाहिए। परिवार प्रबंध करना भी एक बहुत बड़ी चुनौती है जिसे महिलाएं आसानी से करती है। अब बहुत सारे संस्थानों में छोटे-छोटे कौशल विकास वाले प्रशिक्षण कोर्स भी चलाए जा रहे हैं जिससे महिलाएं इस कोर्स को करके आत्मनिर्भर हो रही है। महिला कॉलेज एवं महिला यूनिवर्सिटी की सचमुच जरूरत है। अंत में डॉ पंकज मित्तल ने महिलाओं के लिए प्रेरणादायी बातें कही कि दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं, पहला- जो वक्त के सांचे में ढल गए, दूसरा- जो वक्त के सांचे को बदल दिए। यह आपको निर्णय लेना है कि आपको क्या करना है।

संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के तौर पर ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट के कुलपति प्रो. आई रामब्रह्मम ने इस वेब संगोष्ठी के प्रति खुशी जाहिर करते हुए कहा कि महिला डिसीजन मेकर होती है। महिलाएं एक अच्छी प्रशासक, प्रबंधक एवं सलाहकार भी होती है। महिलाओं में समाज एवं देश को नेतृत्व देने की भी क्षमता होती है। उन्होंने कहा कि इस कोरोनाकाल में भी बहुत सारी महिलाएं समाज के साथ खड़ी दिखी। वे कोरोना योद्धा के रूप में काम की। उच्च शिक्षा में महिलाओं को और आगे आना चाहिए इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन को भी विचार करने की आवश्यकता है।

संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के तौर पर नालंदा विश्वविद्यालय, नालंदा, बिहार की कुलपति प्रो. सुनैना सिंह ने कही कि वेदों में भी स्त्रियों के शिक्षा-दीक्षा की बातें की गई है। प्राचीन समय में बालिकाओं को ललित कला की शिक्षा दी जाती थी। यजुर्वेद एवं ऋग्वेद में भी नारी को शिक्षा का अधिकार दिया गया है। शिक्षा से महिलाओं को वंचित रखना उसपर अत्याचार करने जैसा है। भारत की महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ी है। आज भी महिलाओं के सामने बहुत सारी चुनौतियां हैं, इस चुनौतियों को अवसर में बदलने की आवश्यकता है। महिलाएं हरेक परिस्थितियों का सामना कर सकती है एवं हर क्षेत्र में कुशल प्रतिनिधित्व कर सकती है।

संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के तौर पर एस.एन.डी.टी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र की कुलपति प्रो. शशिकला वनजारी ने शिक्षा के प्रति स्वामी विवेकानंद के विचारों पर प्रकाश डालते हुए कही कि व्यक्ति का विकास शिक्षा से है। जो व्यक्ति प्रकृति से लड़ सकता है वह उसमें चैतन्य होता है। शिक्षा ऐसी हो जिससे चरित्र निर्माण हो सकें और

मस्तिष्क का विकास हो सकें। भारत के शिक्षा व्यवस्था में महिलाओं को प्रथम प्रधानता देना चाहिए तब ही राष्ट्र का विकास होगा। महिलाओं की पवित्रता एवं गौरव शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। उच्च शिक्षा के प्रति महिलाओं में जागरूकता भी बढ़ी है, यह सकारात्मक पहल है। महिलाओं के विकास में पुरुषों का भी योगदान रहा है।

राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा ने सभी वक्ताओं एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह वेब संगोष्ठी एक बहुत बड़े स्तर का शैक्षणिक अनुष्ठान है जिसमें विदेशों से भी कई प्रतिभागी सहभागिता कर रहे हैं। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि वर्तमान में सांख्यिकीय दृष्टि से उच्च शिक्षा में महिलाओं का अनुपात बढ़ा है। यह उत्साहवर्धक संकेत है। आज के इस संगोष्ठी के चारों अनुभवी वक्ताओं के विचार को सुनने के बाद उस पर विमर्श एवं चिंतन करके महिलाओं के लिए एक नया अवसर एवं पथ बन सकते हैं। संगोष्ठी का शीर्षक बेहद महत्वपूर्ण है।

इस राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी में पंजीकृत 8 हजार से अधिक प्रतिभागियों और देश के विभिन्न प्रांतों के एक हजार से अधिक लोगों ने जूम एप के माध्यम से इस कार्यक्रम में भाग लिया। साथ ही विदेश के कुछ प्रतिभागी भी शामिल थे। इस राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का उद्देश्य विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से पचास हजार लोगों तक पहुंचना था।

ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय ओर से डॉ काकोली बनर्जी , सहायक प्रोफेसर और एचओडी आई / सी। जैव विविधता विभाग और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और आईसीसी के पीठासीन अधिकारी ने वेबिनार का समन्वय किया। डॉ। बनर्जी ने संक्षेप में विषय पर प्रकाश डाला। अर्थशास्त्र विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ मिनाती साहू ने प्रो.शशिकला वंजारी की प्रोफाइल पढ़ी, जहां डॉ रुद्राणी मोहंती असिस्टेंट प्रोफेसर, ओडिया विभाग, सीयूओ ने प्रो.संजीव कुमार शर्मा की प्रोफाइल को पढ़ा। कार्यक्रम का समन्वय प्रोफेसर पी। दुर्गाप्रसाद, विजिटिंग प्रोफेसर (समाजशास्त्र) द्वारा निर्देशित किया गया था।

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से प्रो। शाहना मजूमदार राष्ट्रीय वेब सेमिनार के संयोजक थे। इसका समन्वयन डॉ। सपना सुगंधा ने किया, एसोसिएट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, डॉ प्रीति वाजपेयी और डॉ। सपना ने उनकी भागीदारी की।

डॉ। फगुनाथ भोई, जनसंपर्क अधिकारी